SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

प्रेमचंद के उपन्यास–साहित्य में स्वाधीनता और सामाजिक आन्दोलन की भूमिका

अनुभूति सेन, (Ph.D.)
डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
अनुभूति सेन, (Ph.D.)
डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/01/2021
Revised on : -----
Accepted on : 25/01/2021
Plagiarism : 01% on 18/01/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Monday, January 18, 2021
Statistics: 19 words Plagiarized / 2287 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

çsepan ds miU;kl&lkfgR; esa Lok/khurk vkSj lkekftd vkUnksyu dh Hkwfedk çLrkouk:& fdlh Hkh ns'k dk viuk bfrgkl gksrk gS mldh os'kHkw"kk] jgu&lgu] [kku&iku] thou&'kSyh] ,oa Hkk"kkvks ds ek/;e ls mldh igpku gksrh gS vkSj ml ns'k dh laL—fr fo'o esa LFkku çkIr gksrk gS | ,slh gh gekjh Hkkjrh; laL—fr gS ftles fofHkUu çdkj dh fo'ks"krk,a gS tks 'kkçn gh fo'o dh vU; ns'kksa dh laL—fr;ksa esa ns[kus dks feys | Hkkjrh; laL—fr tgk; ,d vksj fofHkUurk esa fofo/krk dks vius esa lesVs gq, gS ogha nwljh rjQ vusdrk esa ,drk dks çnf'kZr djrh gS | Hkkjrh; laL—fr esa tgk; ,d rjQ fgUnw] bLyke] tSu] ckS)] flD[k vkSj bZlkbZ

शोध सार

गोदान उपन्यास का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने पर पता चलता है कि इसमें होरी कभी आंदोलित नहीं होता। वह किसानो की कुचले दबे रहने में मानता है। रायसाहब को क्या दोश दें? भाग्य का खेल है' ऐसा सोचकर वह शांत रहता है। रंगभूमि में अंधे सूरदास के लिए जनता आन्दोलन पर उतर जाती है। प्रेमचंद उस आन्दोलन का समर्थन करते हैं। कर्मभूमि में तो लगान बंदी आन्दोलन को पर्याप्त विस्तार से चित्रित किया है। जहाँ तक सामाजिक आंदोलन का प्रश्न है होरी को इस आन्दोलन की कोई जानकारी नहीं है। गोबर अवश्य शहर में जाकर राजनीतिक एवं कानूनी रूप से परिचित हो गया है। गोदान की कथावस्तु की परिधि का निर्धारण राष्ट्रीय आन्दोलन के द्वारा हुआ है। प्रेमाश्रम के लखनपुर में पटेश्वरी नहीं रहता। यह पत्र राष्ट्रीय आन्दोलन की इस समझ से पैदा हुआ है कि भारतीय किसानों की बदहाली का मुख्य कारण अंग्रेजी राज है। प्रेमचंद संकेत कर देते हैं कि जमींदारी व्यवस्था के समाप्त होते ही जमींदार शक्तिहीन नहीं हो जायेंगे। उनकी शोषण करने की शक्ति भले ही समाप्त हो जाये परन्तु उनकी राजनितिक ताकत तब भी बची रहेगी। प्रेमचंद ने उपन्यास की कथावस्तु में सामाजिक आन्दोलन का उल्लेख समाज के सन्दर्भ में किया है तब भी उपन्यास का मूल कथ्य राष्ट्रीय आन्दोलन की जनतांत्रिक भावधारा की चेतना अभिव्यक्त करता है। प्रेमचंद ने राष्ट्रीय आन्दोलन को समानता पर आधारित समाज व्यवस्था की स्थापना के पर्याय के रूप में देखा था। राष्ट्रीय आन्दोलन की चेतना के विकास के कारण सामान्य जन में नई आशाएं जन्म ले रहीं थी। साधक सम्पन्न वर्ग अपने आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव के कारण स्वतंत्र भारत में भी सत्ताधारी बनेगा और किसान, मजदुर, दलित और पिछड़ों के शोषण के नये मार्ग खोज निकलेगा। पराधीन देश में जिन पुरातन परम्पराओं, रुढियो–रीति–रिवाजों, जातिवाद और आर्थिक

असमानताओं की स्थिति मौजूद थे और उनको बदलने के लिए कोई ठोस कदम उठाये जाने थे। समानता, स्वतंत्रता और न्याय की त्रिसूत्री पर स्वतंत्र भारत की बुनियाद डाली जानी चाहिए, यह प्रेमचंद की प्रामाणिक मान्यता थी। अंग्रेजी राज द्वारा पोषित जमींदारी प्रथा के प्रमुख शोषकों द्वारा भारतीय किसानों का निरंतर शोषण अंग्रेजी सरकार की नीति का ही हिस्सा था। प्रेमचंद ने इन सभी शोषकों द्वारा ओढ़े हुए धर्म, नीति, मर्यादा, कानून, पाप–पुण्य और दया–करुणा–सहानुभूति के मुखौटे हटायें हैं।

मुख्य शब्द

उपन्यास साहित्य, स्वाधीनता और सामाजिक आन्दोलन.

प्रस्तावना

किसी भी देश का अपना इतिहास होता है, उसकी वेशभूषा, रहन–सहन, खान–पान, जीवन–शैली, एवं भाषाओ के माध्यम से उसकी पहचान होती है और उस देश की संस्कृति विश्व में स्थान प्राप्त होता है। ऐसी ही हमारी भारतीय संस्कृति है, जिसमे विभिन्न प्रकार की विशेषताएं है जो शायद ही विश्व की अन्य देशों की संस्कृतियों में देखने को मिले। भारतीय संस्कृति जहाँ एक ओर विभिन्नता में विविधता को अपने में समेटे हुए है, वहीं दूसरी तरफ अनेकता में एकता को प्रदर्शित करती है। भारतीय संस्कृति में जहाँ एक तरफ हिन्दू, इस्लाम, जैन, बौद्ध, सिक्ख और ईसाई संस्कृति के लोग रहते हैं, तो वहीं दूसरी तरफ हिन्दी, तमिल, कन्नड़, उड़िया, बंगाली, पंजाबी, आदि भाषाओ के लोग इसी भारत में भाईचारे की भावना से रहते हैं। इतनी विविधता होने के बावजूद भी हमारी संस्कृति सबको साथ लेकर चलती है।

स्वाधीनता और सामाजिक आन्दोलन

गोदान उपन्यास का ध्यान पूर्वक अध्ययन करने पर पता चलता है कि इसमें होरी कभी आंदोलित नहीं होता। वह किसानो की कुशलता दबे रहने में मानता है। रायसाहब के क्या दोश दें ? भाग्य का खेल है' ऐसा सोचकर वह शांत रहता है। ऐसा नहीं है कि प्रेमचंद ने कभी सक्रिय आन्दोलन का चित्रण किया हो? या उनके पात्र आंदोलित होते हो। रंगभूमि में अंधे सूरदास के लिए जनता आन्दोलन पर उतर जाती है। प्रेमचंद उस आन्दोलन का समर्थन करते हैं। कर्मभूमि में तो लगान बंदी आन्दोलन को पर्याप्त विस्तार से चित्रित किया है। तब प्रेमचंद ने गोदान में होरी को इतना दब्बू डरपोक और समझौता परस्त क्यों दिखाया है ? प्रेमचंद्र साहित्य के मर्मज्ञ विद्वानो ने इस सवाल को उठाया है।

डॉ. नामवरसिंह ने लिखा है। प्रेमाश्रम के बलराज और मनोहर जैसे किसानों को उन्होंने बहुत अधिक विद्रोही दिखाया था, लेकिन होरी को उन्होंने संतोष, धैर्य, सहनशीलता तथा अंधविश्वास का पुंज दिखलाया। जो भारतीय किसानों की जाति विशेषता है। यदि किसान आन्दोलन की ओर ध्यान दें तो प्रेमाश्रम को सत्रह अठारह वर्षों के बाद लिखे हुए 'गोदान' में किसान काफी संतोषी भाग्यवादी और धैर्यवान है। अपने अनुभवों से प्रेमचंद ने इस तथ्य को अंत में समझा और होरी के रूप में उन्होंने ऐसे ही किसान का चित्रण किया जो तमाम किसानों का प्रतिनिधि हो सका।

जहाँ तक व्यक्ति का प्रश्न है, होरी कायर नहीं है। रायसाहब की दावत में वही अकेले होता है, जो पठान बने हुए मेहता की बन्दूक से घबराता नहीं और उससे भिड जाता है। यूँ थानेदार के सामने जाते हुए घबराता है, कारिन्दा महाजन, पंचों का आदेश मान लेटे हैं। वैसे ध्यान से देखने पर पता चलता है कि एक पात्र के रूप में होरी अधुरा पात्र है। वह उपन्यास में कभी अकेला नहीं आता। उसके आगे–पीछे हमेशा धनिया रहती है और वह हर मुद्दे पर अपनी राय देने से बाज नहीं आती। अक्सर होरी धनिया से तर्क से परास्त हो जाता है। उसकी डांट–फटकार खाकर चुप हो जाता है। वह तो धनिया से मिलकर ही सम्पूर्ण चरित्र बनता है। यदि धनिया की तुलना मनोहर से की जाय तो उसके सामने मनोहर धीमा पात्र ही लगेगा।

इसके बावजूद यह तय है कि प्रेमचंद्र ने गोदान में किसानों की आन्दोलन धर्मी चेतना का वर्णन नहीं किया

है वरन् उनकी बदहाली का बयान किया है। वे गोदान में किसानों का आह्वान नहीं करते, उन्हें प्रेरित नहीं करते कि वे उठकर इस व्यवस्था का अंत कर दें, वरन वे शिक्षित मध्यवर्ग को उत्साहित करते हैं। गोदान शिक्षित वर्ग को संबोधित है, इसमें उनकी न्याय चेतना को उकसाने का प्रयास किया गया है, ताकि यह वर्ग किसानों की हित चिंता के लिए संगठित प्रयास करे। प्रेमचंद को यह विश्वास हो गया था कि आधुनिक शिक्षित बुद्धिजीवीयों की सक्रियता के बिना किसान स्वयं अपनी समस्याओ का समाधान नहीं कर सकते। इसलिए उन्होंने किसानों के ओज का वर्णन न कर उनकी असहनीय पीड़ा का चित्रण किया है।

किसान जीवन में सामजिक आन्दोलन का प्रभाव

जहाँ तक सामाजिक आंदोलन का प्रश्न है होरी को इस आन्दोलन की कोई जानकारी नहीं है। गोबर अवश्य शहर में जाकर राजनीतिक एवं कानूनी रूप से परिचित हो गया है। गोबर के व्यक्तित्व पर टिप्पणी करते हुए प्रेमचंद ने लिखा – 'सभाओं में आने–जाने से उसे कुछ–कुछ राजनीतिक ज्ञान भी हो चला है। शास्त्र और वर्ग का अर्थ समझने लगा है सामाजिक रुढियों की प्रतिष्ठा और लोक–निंदा का भय अब उसमे बहुत कम रह गया है। आये दिन पंचायतों ने उसे निःसंकोच बना दिया है। जिस बात के पीछे वह यहाँ घर से दूर मुँह छिपाए पड़ा हुआ है, उसी तरह थी, बल्कि उससे भी कहीं निंदास्पद बातें यहाँ नित्य हुआ करती और कोई भागता नहीं।'

गोदान की कथावस्तु में प्रेमचंद ने राष्ट्रिय आन्दोलन का वर्णन नहीं किया है, तब भी रचनाकार की जीवन दृष्टि पर आन्दोलन का प्रभाव होने के कारण गोदान की कथावस्तु की परिधि का निर्धारण राष्ट्रीय आन्दोलान के द्वारा हुआ है, इसमें कोई संदेह नहीं है। जाहिर है कि गोदान की रचना राष्ट्रीय आन्दोलन के अंतिम उद्देश्य– स्वतंत्र भारत की स्थापना के अनुरूप हुई है।

गोदान में प्रेमचंद ने किसी यूटोपिया की किसी प्रकार के आदर्श समाज या राज्य की परिकल्पना प्रस्तुत नहीं की है। सेवासदन और प्रेमाश्रम की आश्रमवादी आदर्श चेतना का गोदान में नितांत आभाव हैं। सुनहरे भविष्य की आशामयी दृष्टि रचना के यथार्थ को खंडित करती है। यह मानकर प्रेमचंद ने यथार्थवादी रचना–पद्धति के अनुरूप गोदान का सर्जन किया है। यही गोदान की शक्ति है। इसमें लेखक ने होरी–धनिया के जीवन की करुण कहानी पर अपनी दृष्टि केन्द्रित रखी है। इसके साथ ही तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रगति के बारे में भी लेखक आलोचनात्मक दृष्टि से विचार करता हुआ दिखाई देता है। गोदान में स्वतंत्र भारत की एक धुंधली सी तस्वीर अवश्य बना सकते है। इस तस्वीर में प्रेमचंद की निश्चित भविष्यवाणियां, कुछ आशंकाएं हैं, कुछ चेतावनियाँ हैं, कुछ अंदेशा है, कुछ चिंताएं हैं जो अलग–अलग प्रकरणों में देखने को मिलती हैं। प्रेमचंद संकेत कर देते हैं कि जमींदारी व्यवस्था के समाप्त होते ही जमींदार शक्तिहीन नहीं हो जायेंगे। उनकी शोषण करने की शक्ति भले ही समाप्त हो जाये परन्तु उनकी राजनितिक ताकत तब भी बची रहेगी। जब तक जमींदारी व्यवस्था का उन्मूलन नहीं कर दिया जाता तब तक किसानों का अस्तित्व खतरे में है। यदि जमींदारी प्रथा रही तो भारतीय किसान तबाह हो जायेंगे, वे सब के सब खेत मजदूर बन जायेंगे, इसलिए यदि किसानों को बचाए रखना है तो, जमींदारी व्यवस्था का उन्मूलन करना ही होगा।

प्रेमाश्रम के लखनपुर में पटेश्वरी नहीं रहता। यह पत्र राष्ट्रीय आन्दोलन की इस समझ से पैदा हुआ है कि भारतीय किसानों की बदहाली का मुख्य कारण अंग्रेजी राज है। प्रेमाश्रम के डिप्टी ज्वालासिंह का न्याय गोदान में नहीं मिलता। इसके अलावा प्रेमाश्रम का खलनायक ज्ञानशंकर है। प्रेमचंद उस उपन्यास में यही व्यक्त करते है कि यदि ज्ञानशंकर न रहें, जमींदार न रहे, किसानों को सिर्फ मालगुजारी देनी पड़े, तो किसान खुशहाल हो सकते हैं। प्रेमाश्रम के लेखन के बाद असहयोग आन्दोलन और सत्याग्रह आन्दोलन हुआ।

भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ का महत्त्व

यदि हम देश को शरीर माने तो, संस्कृति उसकी आत्मा है जो शरीर को चलने के लिए अति आवश्यक है। किसी भी देश की संस्कृति में अनेक आदर्श है, आदर्श से तात्पर्य मानव के जीवन मूल्य से है। मूल्य का संवाहक संस्कृति होती है, भारतीय संस्कृति में मूल्य से तात्पर्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है जिसे भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ

के रूप में जाना जाता है। यह मानव मूल्यों को पूरा करता है। भगवान राम ने जहाँ अपनी प्रजा के लिए धर्म निभाने हेतु माता सीता को छोड़ा, जो राम के लिए धर्म का पालन उनका जीवन मूल्य का कर्तव्य था। उसी प्रकार श्री कृष्ण ने धर्म के लिए कर्तव्यों के लिए महाभारत के युद्ध में अर्जुन को युद्ध के लिए धर्म ज्ञान का उपदेश दिया। भारतीय संस्कृति में मुख्य रूप से चार मूल्य की बात की गई है, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। लेकिन कोई भी पुरुष इन चारों मूल्यों को एक साथ नहीं देख सकता, क्योंकि व्यक्ति का जीवन सीमित होता है, इसलिए हिन्दू धर्म में वर्ण आश्रम व्यवस्था एवं पुनर्जन्म पर बल दिया गया है। वर्ण आश्रम व्यवस्था को गुण और कर्म के आधार पर आज अगर माने तो यह अब भी वैज्ञानिक तथा सार्थक नजर आती है। यहाँ पर भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्य अर्थात् पुरुषार्थ के सन्दर्भ में बात की गई है कि कैसे पुरुषार्थ अर्थात् मूल्य जीवन संस्कृति में समाहित है।

जीवन मूल्य के रूप में पुरुषार्थ

भारतीय संस्कृति में जीवन मूल्य सांसारिक और पारलौकिक लक्ष्य और कर्तव्य है, जिसमे नैतिक, आर्थिक और सामाजिक व मनोशारीरिक तथा अध्यात्मिक मूल्यों का समन्यवय किया गया है। जीवन मूल्य के अंतर्गत मनुष्य भौतिक सुखों का उपयोग करते हुए धर्म का अनुसरण करते हुए मोक्ष तक पहुचने का प्रयास करता है। भारतीय संस्कृति में चार जीवन मूल्यों जो मानव का कर्तव्य है, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को जीवन का पर उद्देश्य माना गया है। भारतीय संस्कृति में जीवन मूल्य में धर्म श्रेष्ठ माना गया है, केवल धर्म का ही आश्रय लेकर के व्यक्ति इस संसार में परलोक में शांति प्राप्त करता है। भगवतगीता में कहा गया है कि सम्पूर्ण भूतों के कल्याण के लिए ही धर्म की स्थापना हुई है। मानव जीवन के लिए मूल्य उसी प्रकार से ही आवश्यक है जिस प्रकार आत्मा के लिए मोक्ष को मानव जीवन का मूल्य कहा गया है। मूल्य के बिना मानव जीवन संभव नहीं है। मानव जीवन के मूल्यों में सभी गुण समाहित होते हैं। भारतीय संस्कृति में जीवन के रूप में काम को प्रमुख्य लक्ष्य संतानोत्पत्ति व वंश वृद्धि करना है। काम का सर्वोच्च और आध्यात्मिक लक्ष्य पति पत्नी में आध्यात्मिकता, मानव प्रेम, परोपकार तथा सहयोग की भावना का विकास करना है। काम शब्द से कला सम्बन्धी भाव, बिलास ऐश्वर्य तथा कामनाओं का बोध होता है। काम मानव जीवन का मूल्य प्रमुख अंग मन गया है। इसके बिना जीवन के मूल्य भारतीय संस्कृति में अधूरा माना गया है। मोक्ष को भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्य को भारतीय संस्कृति की अंतिम अवस्था कही गई है। जिसमे मानव अपने कर्तव्यों को संस्कृति के अधीन समझता है। मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए पुरुषार्थ, जिसे भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्य के रूप में कहा गया है और व्यतिगत भौतिक सामाजिक एवं आध्यात्मिक जीवन के भी समन्वय स्थापित करता है। मानव जीवन के चरम लक्ष्य उच्चतम आदर्शों की प्राप्ति की दिशा में जो मूल्य निर्धारित किये गए हैं वह मानव व्यक्तित्व और समाज के निर्माण का आधारभूत संरचना कहा गया है। जीवन मूल्य के अंतर्गत पुरुषार्थ को भारतीय संस्कृति में महत्व प्रदान कर मानव जीवन के नैतिक पक्ष को मजबूत बनाया गया है। पुरुषार्थ द्वारा ही लौकिक तथा पारलौकिक उद्देश्यों एवं आदर्शों के बीच सामंजस्य स्थापित किया गया है। पुरुषार्थ के माध्यम से ही व्यक्ति नैतिक, धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक उत्तरदायित्वो को क्षमतापूर्वक निभाने में सफल होता है।

निष्कर्ष

अतः हम कह सकते हैं कि अगर भारतीय संस्कृति के जीवनमूल्य को पुरुषार्थ का आधार माना जाय तो यह कहना गलत नहीं होगा कि भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्य कोई और हो सकता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति के जो आदर्श मूल्य विश्वास नैतिकता, आचरण, परंपरा, कर्मकांड आदि मानव जीवन के मूल्यों के रूप में भारतीय संस्कृति के रूप में समाहित है, और आज भी भारतीय संस्कृति में ये सब देखने को मिलता है। आज पश्चिमी संस्कृति भारत जैसे देशों में तेजी से अपना प्रचार–प्रसार कर रही हैं, लेकिन भारतीय संस्कृति में लोग आज भारतीय लोग अपने जीवन के मूल्यों और कर्तव्यों का पालन कर रहें हैं। यही भारतीय संस्कृति सबसे बड़ी पहचान है, इसलिए हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ एक जीवन मूल्य के साधन के रूप में संस्कृति से जुदा हुआ है और जीवन मूल्य को पथ प्रदर्शित कर रहा है।

निष्कर्ष यह है कि भले ही प्रेमचंद ने उपन्यास की कथावस्तु में सामाजिक आन्दोलन का उल्लेख समाज के सन्दर्भ में किया है तब भी उपन्यास का मूल कथ्य राष्ट्रीय आन्दोलन की जनतांत्रिक भावधारा की चेतना अभिव्यक्त करता है। गोदान की कथावस्तु में राष्ट्रीय आन्दोलन की उपस्थिति अपेक्षाकृत कम है, तब भी उपन्यास का कथ्य राष्ट्रीय आन्दोलन की जनतांत्रिक भावधारा की चेतना को अभिव्यक्त करता हैं। गोदान वास्तविक ब्रिटिश राज द्वारा स्थापित व्यवस्था का विरोधी है। अंग्रेजी राज द्वारा पोषित जमींदारी प्रथा के प्रमुख शोषकों द्वारा भारतीय किसानों का निरंतर शोषण अंग्रेजी सरकार की नीति का ही हिस्सा था। प्रेमचंद ने इन सभी शोषकों द्वारा ओढ़े हुए धर्म, नीति, मर्यादा, कानून, पाप–पुण्य और दया–करुणा–सहानुभूति के मुखौटे हटायें हैं। इनकी सच्चाई से परिचित कराया है। किसान को घेरे रहने वाली ये शोषक शक्तियां आर्थिक रूप से किसान की इन पर पूर्ण रूप से निर्भरता के कारण खुद को किसान का शोषण करने का अधिकारी मानती हैं। इस प्रवृति को बनाये रखने में अंग्रेज राज और उसके तंत्र ने पूरा साथ दिया। प्रेमचंद ने राष्ट्रीय आन्दोलन को समानता पर आधारित समाज व्यवस्था की स्थापना के पर्याय के रूप में देखा था। राष्ट्रीय आन्दोलन की चेतना के विकास के कारण सामान्य जन में नई आशाएं जन्म ले रहीं थी। साधक सम्पन्न वर्ग अपने आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव के कारण स्वतंत्र भारत में भी सत्ताधारी बनेगा और किसान, मजदुर, दलित और पिछड़ों के शोषण के नये मार्ग खोज निकलेगा। पराधीन देश में जिन पुरातन परम्पराओं, रुढियो–रीति–रिवाजों, जातिवाद और आर्थिक असमानताओं की स्थिति मौजूद थे और उनको बदलने के लिए कोई ठोस कदम उठाये जाने थे समानता, स्वतंत्रता और न्याय की त्रिसूत्री पर स्वतंत्र भारत की बुनियाद डाली जानी चाहिए, यह प्रेमचंद की प्रामाणिक मान्यता थी।

सन्दर्भ सूची

1. सिंह, ओम प्रकाश. *प्राचीन भारतीय समाज एवं शासन*।
2. अहमद, लाइक. *मध्यकालीन भारतीय संस्कृति*।
3. दुबे, हरिनारायण. *भारतीय संस्कृति एवं कला*।
4. मूर्ति, कृष्णकृपा. *जीवन का स्रोत जीवन*।
5. ईश्वर प्रसाद. *प्राचीन भारतीय संस्कृति*।
6. ईश्वर प्रसाद. *धर्म तथा दर्शन*।
7. सिंह, नामवर. *आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ*।
8. *प्रेमचंद और भारतीय किसान*।

****